# भारतीय समाज में राजाराम मोहनराय की हिन्दी साहित्य में नयी चेतना

*डॉ. हरीश चन्द्र

**शोध सारांश**

पूर्व और पश्चिम के उदास गुणों को स्वीकार कर भारतीय समाज में नई चेतना व नयी स्फूर्ति का संचार करने वाले राजा राम मोहन राय आधुनिक भारत के जनक के रुप में सदैव स्मरण किये जायेंगे। अपने भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शनों व सभ्यताओं का विधिवत अनुशीलन कर निम्नलिखित चार बातों पर जोर दिया–

1 मूर्ति पूजा का विरोध,

2 एकेश्वर वाद में अटल विश्वास,

3 बुद्धिवादी दृष्टिकोण तथा

4 मानव धर्म।

इन्हीं तत्वों के घोषणा पत्र के प्रचार के लिए 1830 में ब्राह्म समाज की स्थापना की। भवन के घोषणा पत्र में कहा गया, सभी लोग, किसी भेदभाव के बिना, शाश्वत सत्ता की उपासना के लिए एक समाज भवन का प्रयोग कर सकते है। इनमें किसी प्रकार की मूर्ति की स्थापना न होगी न इसमें कोई बलिदान होगा न किसी के धर्म की निन्दा की जायेगी।

राजा साहब ने समाज सुधार के अनेक कार्य किये जिनमें सती प्रथा उन्मुलन के लिए वे चिरस्मरणीय रहेंगे। इस प्रथा के उन्मुलन में उन्होंने लार्ड विलियम बैटिक को प्रेरित कर सन् 1929 में सती प्रथा उन्मुलन सम्बन्धी कानून पारित कराया। सती प्रथा के अतिरिक्त बाल विवाह, बहुविवाह का विरोध किया। ईसाई धर्म के प्रचा को रोका तथा अनेक ईसाई धर्मान्तरित बन्धुओं को स्वसमाज में पुनः दीक्षित किया। भारतीयों की भावी उन्नति की दृष्टि से अंग्रेजी पठन–पाठन को प्रोत्साहित किया तथा समुद्रयात्रा–वर्जन का विरोध कर स्वयं विलायत गये। वहा जाकर भारतीयों के स्वत्वों का रक्षण किया।

अपने वैचारिक स्वतन्त्रता की नींव डाली तथा प्रेस की स्वाधीनता का समर्थन किया। एक राष्ट्रनिर्माता के रूप में वे न्यायपालिका और कार्यपालिका के पृथक्करण को उचित मानते थे तथा अदालतों में जूरी प्रथा का प्रयोग चाहते थे। एक शिशाविद के रूप में मध्यम की दृष्टि से अंग्रेजी का समर्थन किया। वे हिन्दुतत्व के कट्टर समर्थक थे। वे वेदोक्त रीतियों का पुनरुत्थान चाहते थे और अग्रेंजों को हिन्दुत्व के

श्रेष्ठ विचारों से प्रभावित करते थे किन्तु हिन्दुओं की भावी प्रगति व उन्नति की दृष्टि से अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान के अध्ययन की ओर प्ररित करते थे। मानवतावादी समाजसुधारक 15, ऋषि 16 समन्वयवादी 17, शिक्षाशास्त्री, राष्ट्रनिर्माता और पत्रकार जैसें विविधरुप उनके व्यक्तित्व में एकरुप हो गये थे। उन्होंने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा से भारतीय समाज की बहविधि सेवा की ओर एक गन्तव्य का दर्शन कराया। अस्तु, निकल मेकनिकल उन्हें उचित ही सत्य के नए महाद्वीप के अन्वेषण में भारत के कोलम्बस 18 विरुद्र से विभूक्ति करते है।

22 मई 1772 ई में इस महापुरुष का ब्रिस्टल में निर्वाण हो गया। आपके पश्चात ब्रह्म समाज का नेतृत्व श्री केशव चन्द्र सैन ने सम्हाला और ब्रह्म समाज को वर्णदिक भेदभावों से मुक्त कर व्यापक बनाया। श्री सैन के उपरान्त ब्रह्म समाज आन्तरिक मतभेदों के कारण आदि समाज, साधारण समाज तथा प्रार्थना समाज नामक तीन संस्थाओं में विभक्त हो गया। प्रार्थनासमाज की संस्थापना डा आत्माराम पाण्डुराम ने की जिसमें श्री रानाडे और भण्डारकर भी सम्मिलित हुये। इस समाज ने नारी उद्वार व नारी जागरण तथा अछूतोवार के प्रशन को उठाया किन्तु भावी पीड़ी में त्याग व सेवावृत्ति मिश्नीरी स्प्रिट विलुप्त हो जाने से यह संगठन भी समाप्त हो गया।

पाश्चात्य शिक्षा व दीक्षा में पालित व पोषित व्यक्तियों को भारतीय धर्म व संस्कृति के प्रति उन्मुख करने में स्वामी रामकृष्ण जी परमहन्स का भारतीय पुनर्जागकण के द्वितीय चरण में अप्रतिम योगदान है। परमहन्स जी ने अपने आचरण से हिन्दुत्व के उदारभाव को प्रस्तुत किया। उनके आचरण से अनेक नवयुवक तथा विदेशी पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान को ही सर्वस्व समझते थे, हिन्दुत्व से प्रभावित हुए तथा हिन्दू संस्कृति की ओर आकृष्ट हुये। ऐसे ही नवयुवकों में एक नरेन्द्र नामक युवक परमहन्स जी के मिशन को दिगदिगन्त व्यापी करने के लिये कटिबद्ध हुआ। यही युवक स्वामी विवेकानन्द के रुप में प्रख्यात हुआ। इनके द्वारा रामकृष्ण परमहन्स की अनुभूतियां एवं आदर्श व्यवहृत हुये। स्वामी विवेकानन्द ने देश और विदेशों दोनों स्थानों पर कार्य किया। स्वदेश में रहकर सिसकती गरीबी, पलती अमीरी और पतनोन्मुख भारत की गुरुत्वहीन चेतना का साक्षात्कार किया तथा भारत के कायाकल्प की योजना प्रस्तुत की। समाज में आगत संकीर्णताओं पर प्रहार किया तथा कर्म का उपदेश दिया। नारी–स्वातन्त्र्य पर बल देकर उनके सती व दुर्गा रुप का स्मरण कराया। वर्णव्यवस्था के विकारों पर कुटाराघात किया तथा सबकी समता का उद्घोष किया भारत माँ सर्वोपरि है। सब उसके बच्चे हैं, उसके भक्त हैं। इस नाते सब समान है।

अपने हिन्दु धर्म की युगानुकूल व्याख्या की। उसमें परकीयदासता जन्य आगत कुरीतियों व दोषों का परिहार कर हिन्दुत्व के शुद्ध–बुद्ध रुप को विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर भारतीयों में भारत विकास की बलवती स्पृहा निर्माण की मानवजाति की सेवा को ईश्वर सेवा घोषित करते हुये निवृत्तिपरक धर्म के स्थान पर प्रवृत्ति पर धर्म का बोध कराया। विदेशों में उन्होंने मतवादों की संकीर्णताओं से निकलने का आह्वान किया। सर्वधर्मसमन्वय तथा एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठा करते हुये हिन्दु की तेजस्वी झांकी विदेशियों के समक्ष प्रस्तुत की। इस प्रस्तुति की दो प्रतिक्रियायें हुई एक तो यह कि ऐसे ज्ञानी देश को सुधारने के लिये धर्मप्रचारक भेजना कितनी बेवकुफी की बात है।

***सह–आचार्य,**
**हिन्दी विभाग,**
**राजकीय महाविद्यालय बहरोड़, अलवर (राज.)**

**संदर्भ सूची**

1. राजा राममोहन राय से गांधीजी – मगनभाई देसाई
2. लन्दन में लंगोटीवाला – सुन्दरलाल त्रिपाठी
3. राष्ट्रपिता – जवाहरलाल नेहरू
4. सत्याग्रह मीमांसा – गोपीनाथ धवन
5. सत्यमेव जयते – श्री मन्नारायण अग्रवाल